भूमिका

"भारत और उसके पड़ोसी देश - साहित्य में स्त्री प्रतिरोधी स्वर" में स्त्री लेखन के माध्यम से उनकी रचनाओं के द्वारा भारत,पाकिस्तान और बांग्लादेश की महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक स्तर पर स्थितियों का आंकलन किया गया है। समाज की पितृसत्ता सिद्धांत के बीच उपस्थित स्त्री लेखन के माध्यम से स्त्री प्रश्न और उन सिद्धांतों को ख़ारिज करते रही प्रतिरोधी स्वर को व्यक्त किया है। स्त्री के मूल्य मर्दों के द्वारा निर्मित मूल्यों से अलग होते हैं फिर भी पुरुषों के मूल्य प्रभावी होते दिखाई देते हैं। नारीवादी विमर्श स्त्री की मानवीय अस्मिता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। कमला भसीन ने अपनी पुस्तक

Some Questions on feminism and its relevance's in South Asia में नारीवादी शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है:

"Feminism is based on historically and culturally concentrated realities and level of consciousness, perceptions and actions"

'वाद' जिस शब्द के साथ जुड़ता है, अपने साथ एक विचार, चिंतन, क्रांति,संघर्ष और आन्दोलन के बीच को लेकर चलता है। जैसे जैसे वह वाद का बीज पनपता है, बढ़ता है वैसे वैसे वाद के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के विचार सामने आने लगते हैं। इस विचार से 'वाद' का एक रचनात्मक और सकारात्मक पक्ष सामने आता है, जिसमे समाज के अधिकार लोगों का हित समाहित होता है। समाज के अधिकांश लोगों के हित केक सिलसिले में स्त्री लेखिकाओं ने साहित्य के माध्यम से स्त्री की यथा वर्णन करके प्रतिरोधात्मक आवाज उठाई। जब तक स्त्रियों और पुरुषों के बीच संबंधों का पुनर्गठन नहीं हो जाता, तब तक समाज का पुनर्गठन और पूर्ण रूप से विकास संभव नहीं है। कोई भी साहित्य समाज को साथ ले कर ही अपनी रचना करता है।

२०वीं आठवे दशक के मध्य से नारीवादी विशेषज्ञों ने पितृसत्ता शब्द का प्रयोग और विशिष्ट अर्थ में परिभाषित करना शुरू कर दिया था। पितृसत्ता जिसके जरिये अब संस्थानों के एक ख़ास समूह को पहचाना जाता है, जिसे सामाजिक संरचना और क्रियाओं की एक ऐसी व्यवस्ता के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमे 'पुरुषों' का स्त्रियों पर वर्चस्व रहता है और वे शोषण और उत्पीड़न करते है। पितृसत्ता के सबसे सम्पूर्ण और उपयोगी परिभाषा गर्डा लर्नर ने दी है :

"उनके सूत्रीकरण के अनुसार 'पितृसत्ता परिवार में ' महिलाओं और बच्चों पर पुरुषों के

वर्चस्व की अभिव्यक्ति और संस्थागात्करण तथा सामान्य रूप से महिलाओं पर पुरुषों के सामाजिक वर्चस्व का विस्तार है। इसका अभिप्राय है की पुरुषों का समाज के सभी महत्त्वपूर्ण सत्ता प्रतिष्ठानों पर नियंत्रण रहता है और महिलाएं ऐसी सत्ता तक पहुचने से सम्बंधित रहे हैं।"[1]

२० वीं सदी में जब एशिया में स्वतंत्रता आन्दोलन आरम्भ हुआ तो धीरे धीरे एशिया का नया भौगोलिक वर्गीकरण किया गया। जिसके अंतर्गत भारत और उसके पड़ोसी देश दक्षिण एशिया के नाम से पुकारे जाने लगे।

दक्षिण एशियाई देश के अंतर्गत भारत, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलन्का आते हैं। उपर्युक्त लघु शोध प्रबंध में शोध के लिए भारत, पाकिस्तान आर बांग्लादेश का चयन किया गया है, जो भारत के पड़ोसी देश हैं। इन तीनों की लेखिकाओं की रचना के माध्यम से साहित्य में प्रतिरोध देखा गया है। यह प्रतिरोध मात्र साहित्यिक तौर पर नहीं बल्कि सामाजिक तौर पर भी दर्ज हुआ है। मूल्य रूप से लेखिका के रूप में भारत से नासिरा शर्मा, पाकिस्तान से जाहिदा हिना और बांग्लादेश से तसलीमा नसरीन का चयन किया है। इन तीनों ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक संस्थानों में स्त्री जकड़न, स्त्री मुक्ति की आकांक्षा, स्त्री अधिकारों को स्वानुभूति के धरातल पर बखूबी उतरा है। सर्वप्रथम दक्षिण एशियाई देशों के लोकतान्त्रिक व्यवस्था को देखा गया। लोकतंत्र का सम्बन्ध परस्पर रूप से अपने अधिकारों के लिए स्वतंत्रता के रूप में स्थापित होता है। वाकई में संवैधानिक रूप में लोकतान्त्रिक देश में सभी वर्ग, लिंग, जाति एक तराजू पर विद्यमान है। दक्षिण एशिया में लोकतंत्र की जंग स्त्रियों के नाम पर ही छिड़ी थी और आज की तारीख में इस वर्ग को हाशिये पर रख दिया गया है। राष्ट्र की तानाशाही समाप्ति के बाद इन तीनो देशों में महिलाओं ने स्वयं की आजादी की लड़ाई प्रारंभ कर दी। नारीवाद का जन्म दक्षिण एशिया में नहीं हुआ पर ऐसे कई परिवर्तन और धरना का विशेष प्रभाव दृष्टव्य होता है। इस आन्दोलन ने लिंग आधारित भेदभाव का विरोध करते हुए समानता का अधिकार के समर्थन में लड़ाई खड़ी की। इन आन्दोलनों में रखे गए मांग आज भी पूर्ण नहीं हो पाए हैं जिस कारण साहित्य में इसका प्रभाव पड़ रहा है।

[1] चक्रवर्ती,उमा,पितृ सत्ता एक नोट्स,स्त्री संवाद,वर्ष २०१४,९ मार्च,पृष्ठ संख्या १८

पाकिस्तानी लेखिका जाहिदा हिना के औरत से जुड़े मुद्दे बेहद दिल के करीब होते थे। विभाजन के त्रासदियों उनका जन्म सासाराम (बिहार) में हुआ परन्तु विभाजन के कारण वह पाकिस्तान चली गयी। इनके दो तजुर्बे तालिब है। पहला, पत्रकार के रूप में आवाज बुलंद है जिस कारण तत्कालीन हालातों पर कॉलम लिखती हैं। दूसरा, बड़े हौसलों के साथ कहानियां लिखती हैं। इनके व्यवहार की बगावत इनकी रचना में दिखाई देती है। इनके बगावत के अनेक मुद्दे सामने आये, सियासत और समाज के मुद्दों पर काफी गंभीर थी। ' पाकिस्तानी स्त्री : यातना और संघर्ष ' पुस्तक में प्रकाशित लेख 'पाकिस्तानी औरत : आजमाइश की आधी सदी ' स्पष्ट रूप से यथार्थ के धरातल पर लिखा गया है।

अंतर्राष्ट्रीय यश प्राप्त तसलीमा नसरीन समकालीन बांग्लादेशी लेखिकाओं में प्रसिद्ध लेखिका हैं। साहित्य में अपने लेखन और व्यक्तित्व से दबंग और निर्भीक छवि के रूप में उभरी हैं। यह सरल रैखिक नहीं बल्कि जटिल व्यक्तित्व है। तसलीमा नसरीन को सेक्स लेखिका और नगण्य लेखिका मानकर उपहास और अपमानित किया जाता है। इन सब के कारण जवाब निर्वाचित कलाम ' हिंदी में अनुवादित 'औरत के हक ' के माध्यम से दिया। १९९२ में 'औरत के हक' के लिए आनंद पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके सामाजिक और निजी जीवन में सबसे प्रभावी बदलाव १९८३ में 'लज्जा' पुस्तक प्रकाशन के बाद आया। लज्जा उपन्यास के बाद उनकी कड़ी आलोचना हुई थी। लज्जा ने एक ऐसे तूफ़ान को जन्म दिया और यह तूफ़ान जन्म देने की शक्ति तसलीमा के साहस में थी। उसे धर्म विरोधी घोषित कर उनके खिलाफ फतवा जारी कर दिया गया। तसलीमा का लेखन हमेशा से विवादित रहा है। पुरुषों का विरोध, इस्लाम का विरोध फिर देश का विरोध। वो केवल इस्लामी विरोधी नहीं थी बल्कि वो धर्म विरोधी थी। 'औरत के हक में ' यह शीर्षक स्वयं में निर्भीकता का सूचक है । यह पुस्तक नारी विमर्श के समावेशी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

भारत में लेखन की वास्तविक सतह पर बगावत करने वाली महिलाओं में नासिरा शर्मा का नाम उल्लेखित होता है। नासिरा शर्मा समाज के विपुल आयाम रहे हैं। किसी भी साहित्यकार की रचना को उनके व्यक्तिगत जीवन और अनुभवों से अलग करके नहीं देखा जा सकता क्योंकि लेखक के विचार और भावनाएं उसके जीवन के ही प्रतिक्रिया होते हैं। बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न नासिरा शर्मा का जन्म शिया परिवार में हुआ था। इनकी रचनाओं काल्पनिक और जीवन अधिक

लगती हैं। एक मिथकीय पत्र के साथ बात करना, सवाल जवाब के साथ बहुत से तत्कालीन और सामयिक मुद्दों पर टिपण्णी करना उनकी लेखनी का अद्भुत हिस्सा है। समकालीन हिंदी कहानी को बिना किसी चीख चिल्लाहट से गढ़ा जाना एक नए परिवर्तन की ओर इशारा कहा जा सकता है। क्योंकि ये बदलाव इस मायने में ज्यादा सार्थक और असरदार माना जाता है। रचकर अपनी संस्कृति परिवेश और वातावरण को पहचान कर अपने संघर्ष करते हुए अपना सामंजस्य बिठा आगे बढ़ रहा है। समकालीन कहानी में अपने वर्ग बोध और वर्ग दायित्व को खोजकर अपनी सामाजिक परम्पराओं के विश्लेषण की वैज्ञानिक दृष्टि के अगले उत्थान को सूचित किया है। नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'खुदा की वापसी ' कुछ इसी परंपरा की है।

प्रस्तुत शोध में स्त्री जीवन के विविध पहलुओं के आधार पर तुलनात्मक रूप से जाहिदा हिना, नासिरा शर्मा और तसलीमा नसरीन की रचनाओं पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत शोध में तुलनात्मक विधि के साथ साथ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध कों की चार अध्याय में विभाजित किया गया है।

पहला अध्याय - **' भारत और उनके पड़ोसी देश का परिवेश और नारीवादी आन्दोलन'** है। जिसमे दक्षिण एशिया देशों की भौगोलिक संरचना से लेकर इन देशों में लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं पर बात की गयी है। इसके बाद भारत, पकिस्तान और बांग्लादेश में नारीवादी आन्दोलन के चरण और मुद्दों को स्पष्ट किया गया है।

शोध के दूसरे अध्याय में **' भारत और उनके पड़ोसी देश की लेखिकाओं का जीवन परिचय तथा प्रतिरोध स्वर' हैं** '। इस अध्याय में नासिरा शर्मा, जाहिदा हिना और तसलीमा नसरीन के जीवन का हर दृष्टिकोण से परिचय के साथ साहित्य उनके जीवन में उनके बगावत की चर्चा की गई है।

शोध के तीसरे अध्याय में **'भारत और उनके पड़ोसी देश के लेखिकाओं की प्रतिरोधात्मक स्वर'** रचना का चयन किया गया है। जिसके अंतर्गत जाहिदा हिना के द्वारा लिखित लेख, ' पाकिस्तानी औरत : आजमाइश की आधी सदी', तसलीमा नसरीन के द्वारा

लिखित ' औरत के हक में 'तथा नासिरा शर्मा के द्वारा लिखित कहानी ' खुदा की वापसी' को आधार बनाकर चर्चा की गयी है। इन रचनाओं को आधार बनाकर इन में अंकित मुद्दों को उठाया गया है।इनमे लेखिकाओं की लेखनी में आये प्रतिरोधी स्वर को भी उजागर किया गया है।

प्रस्तुत शोध का अंतिम अध्याय शोध के निष्कर्ष के रूप में है।

प्रस्तुत शोध में विश्लेषणात्मक एवं नारीवादी शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। साहित्य में महिला स्त्री लेखन के साथ साथ लेखिकाओं की रचनाओं में अंकित मुद्दों में अंतर्संबंध स्थापित किया गया है। धर्म, समाज,कानून,राजनीति,यौनिकता इन सभी संस्थाओं के केंद्र में स्त्री की स्थिति को व्याख्यायित किया गया है

-मेघा